# भजन

इक अर्श में बात ऐसी,जो हक से भी न होय
रूह अपनी को भूल जायें,ये काम न हक से होय

1– बिन मांगे ही सुख देते,खेल रूहों ने मांग लिया
सुरता को फिराये दिया,तन चरनों से दूर न किया
रूह खेल में भूल गई,ये भूल न हक से होय

2– इक पल की जुदाई भी,धनी सहन नहीं करते
सुरता ने जो तन धारा,दिल उसका अर्श करते
माशूक की नजरों से,आशिक पल दूर न होय

3– बेमिसाल धनी मेरे,बेहिसाब इश्क उनका
बेमिसाल हैं पैमाने,बेहिसाब है सुख उनका
ए सुख सोई जाने,जो अरवाह अर्श की होय

4– हाथ पकड़ के रूहों का,माया से निकाल लिया
देके इश्क इलम अपना,सुख धाम का इत है दिया
बलिहार तेरी रूहें,हक ऐसे जिनके होय